नाश्ते के पहले समुद्र तट

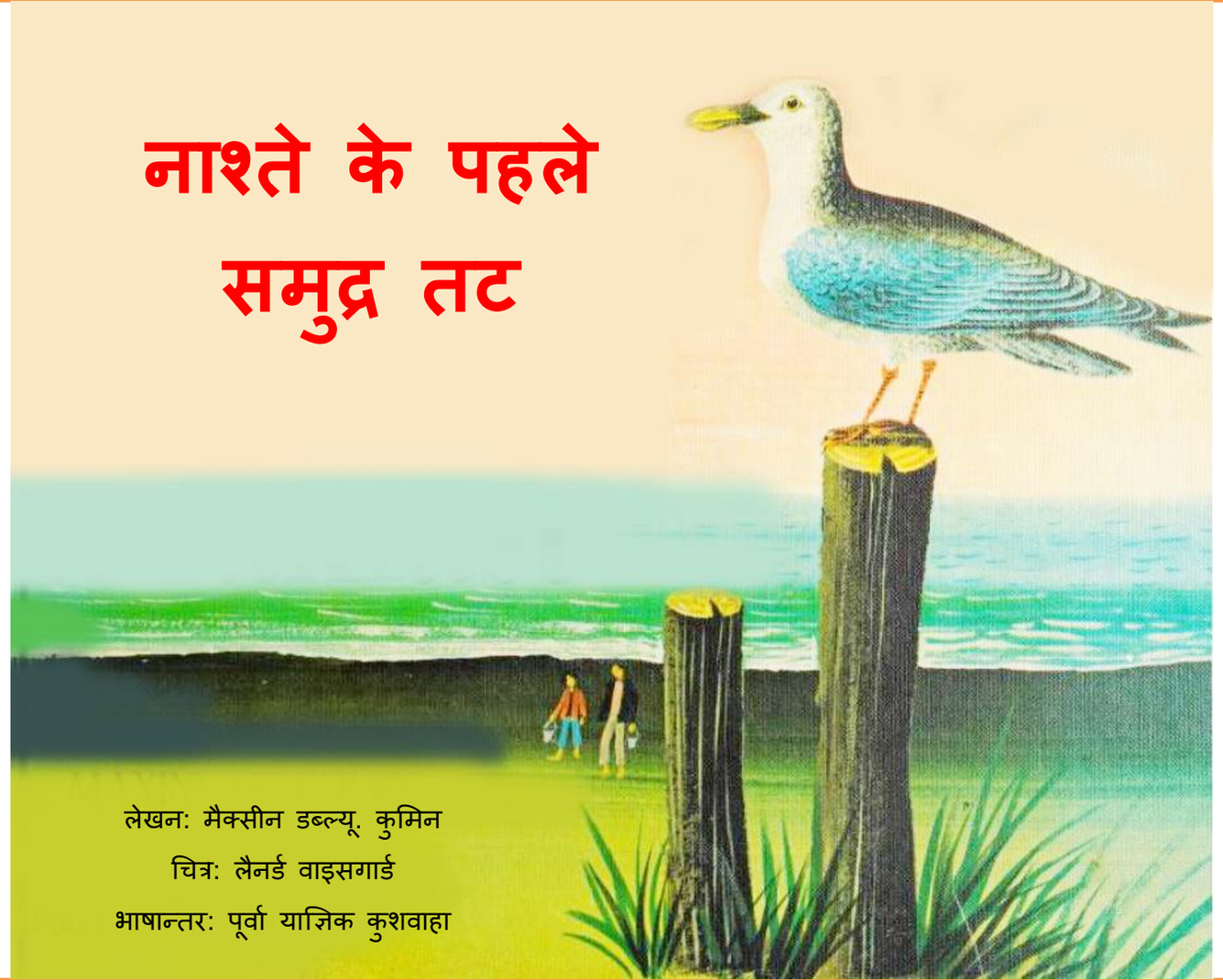

लेखन: मैक्सीन डब्ल्यू. कुमिन

चित्र: लैनर्ड वाइसगार्ड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

नाश्ते के पहले समुद्र तट

'तुम' के रूप में पाठक और वयस्क दोस्त के रूप में 'मैं', अल्ल सुबह समुद्र तट की छानबीन करते हैं। हम उकड़ूं बैठ 'स्क्वर्ट' छेद (सीपी द्वारा पिचकारी मारने से बने छेद) तलाशते हैं। हम खुरच-कुरेद कर क्वाहॉग (बड़ी सीपी) और क्लैम (छोटी सीपी) और दूसरी तरह के शंख और सीपियाँ बटोरते हैं। हम छोटी मिन्नो मछलियों और जल-कुक्कटों को देखते हैं। आख़िर हम सागर तट पर बने अपने कॉटेज में यह तय करते लौटते हैं कि नाश्ते में हम क्लैम खाएंगे या पैन केक।

नाश्ते के पहले समुद्र तट

लेखन: मैक्सीन डब्ल्यू. कुमिन
चित्र: लैनर्ड वाइसगार्ड
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मैं बिस्तर पर झुकता हूँ और तुम्हें आहिस्ता से हिलाता हूँ। एक बार, तब दूसरी बार। तुम अपनी आँखें खोलने के पहले उन्हें मलते हो। मुझे देख तुम मुस्कुराते हो।

"शश!" मैं कहता हूँ। "दूसरों को मत जगाना," और तुम जवाब में कहते हो, "शश!"

तुम अपनी नीली जीन्स और स्वैटशर्ट पहनते हो। हम दबे पाँव कॉटेज से बाहर निकलते हैं। इतने गुपचुप कि लम्बी घास में दुबके तीन खरगोश चौंकते नहीं, बल्की अपना कुतरना जारी रखते हैं।

बरामदे के नीचे उतर मैं बाल्टी और कंटिया उठाता हूँ और तुम कुरेदनी और जाल। हम सागर तट पर अपनी पहली सुबह बिताने, रेत के ढूहों के बीच बने रास्ते पर उतरते हैं। साथ-साथ बिताई जाने वाली गर्मी शुरू हो रही है। तुम्हारे लिए कुछ और भी है जो तुम्हें अचम्भे में डाल देगा।

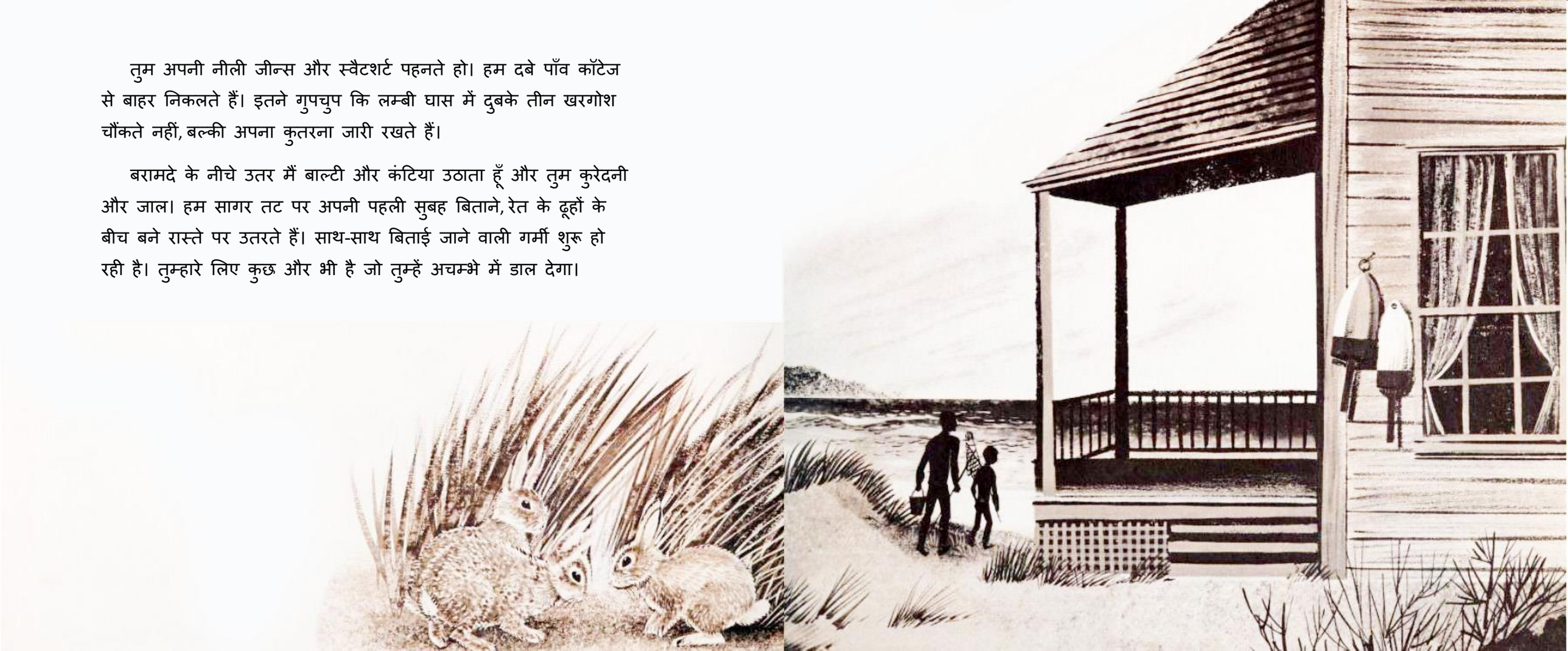

सूरज बस उग ही रहा है। हमारे ऊपर खुला आसमान हल्का गुलाबी है, रगड़ खाकर चिकने हुए कंकड़-सा।

भाटे का समय है सो, लहरें तट को इंच-दर-इंच छोड़ रही हैं। हम ऊँचे पानी के निशान के पास खड़े हो कर हमारे घर के विशाल ऊबड़-खाबड़ पिछवाड़े को देखते हैं। समुद्र अब भी सोया हुआ है, दूधिया-सुरमई और ख़ामोश।

तट पर हम लगभग अकेले हैं। छह जल कुक्कट सागर में निकले रेत के नुकीले हिस्से पर फड़फड़ाते उतरते हैं। वे सुबह के नाश्ते के लिए केंकड़े तलाश रहे हैं। अगले सपाट पर टिटहरियों का एक परिवार खाने को उतरा है। वे खाते-खाते आपस में बतियाते हैं। वे इधर-उधर दौड़ते हैं, टूंगते हैं, चिंचिंयाते हैं। उन्हें लगता है कि रेत में दुबके कीड़े लज़ीज़ नाश्ता है।

“हम नीचे उतर उस छोर से शुरू करते हैं,” तुम कहते हो।

मैं शायद एक आह भरता हूँ। काफ़ी दूर पैदल जो जाना होगा। पर हम चल पड़ते हैं। बिल्ली की तरह, तट के बीच से रास्ता काट। पहले गहरी मुलायम रेत के पार, तब तिरछे समतल ज़मीन के बीच से। हम भाटे के साथ बढ़ रहे हैं, जो पानी को कम से कमतर बना रहा है। तुम कुरेदनी को अपने पीछे घसीट रहे हो। उससे रास्ते भर रेत पर ऐसे निशान बन रहे हैं मानो किसी विशाल पाखी के पंजों के हों।

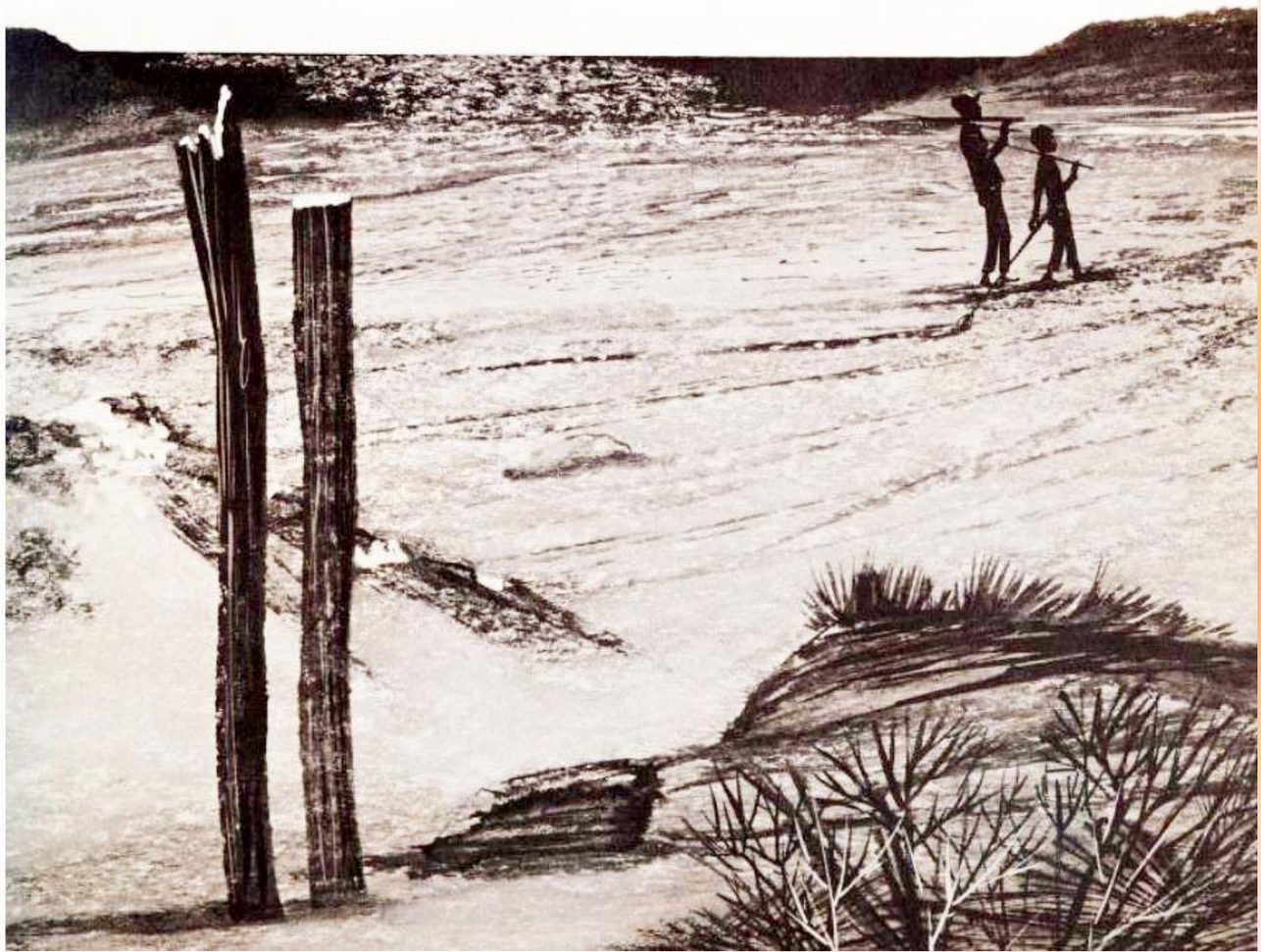

पानी के पास ही तुम्हें शंख-अण्डों की एक लड़ी मिलती है। कई सप्ताह पहले, भाटे के बाद की रेत में वे अण्डे दिए गए होंगे। अब समुद्र उसे पीछे छोड़ गया है। अण्डों के खोल की दोहरी कतार अब बिलकुल ख़ाली है। तुम उसे कागज़ की माला की तरह गले में लटका लेते हो। यह तुम्हें बहुत खुशी देता है।

मैं तुम्हें उन शंखों के बारे में बताता हूँ जिन्हें फूंक-बजा कर मछुआरे घर लौटते समय एक-दूसरे को बुलाया करते थे। मैं तुम्हें यह ठीक से दिखाने के लिए अपने हाथ मोड़, दोनों अंगूठे होंठ पर रख, शंख की आवाज़ निकालता हूँ।

हम दोनों मिल कुछ नाल (हॉर्सशू) केंकड़ों के खाली खोलों को उलटते-पलटते हैं। वे पुराने ज़माने के हैलमेट जैसे लगते हैं जिन्हें सैनिक पहना करते थे। तुम एक खोल को उसकी पूंछ से उठा झुलाते हो। हम कुछ देर खोल के मालिकों की बात करते हैं, जो अब और भी बड़े खोल पहने समुद्र तल में तेज़ रफ्तार से भाग-दौड़ कर रहे होंगे।

अब हम अपने तट के आखिरी छोर तक आ पहुँचे हैं। हम मछली पकड़ने वाली बड़ी नाव को घाट से निकलते देख हाथ हिलाते हैं। जल-कुक्कटें मछुआरों से चारे की भीख मांगने नाव की ओर उड़ जाती हैं।

सूरज अब ऊपर चढ़ रहा है, और आसमान को नीले रंग से भर रहा है। समुद्र का रंग भी बदल रहा है। वह अपने ही आप फैनिल हरे रंग को उभार रहा है।

हम अपनी जीन्स ऊपर लपेटने के वास्ते रुकते हैं। ऊँचे पानी के निशान से हम कितनी दूर आ चुके हैं! पसरी हुई रेत का रंग अब पके गेहूँ के खेत-सा दिख रहा है। उधर रेत के ढूहे मोटे ऊँटों से बैठे लगते हैं। उनके कूबड़ों के बीच लम्बी घास लहरा रही है।

अब हम शुरुआत करते हैं।

जहाँ पानी समतल-सपाट में पिघलता है, उसके पास मैं कंटिए से मटमैली घास-फूस हटाता हूँ। मैं खड़े-खड़े ही कंटिए को आगे-पीछे चला रहा हूँ। तुम्हारे हाथ में छोटी कुरेदनी है। तुम उँकड़ू बैठ छेद तलाश रहे हो। तुम्हे पता है कि करना क्या है। पिछली गर्मियों में मैंने जो कुछ सिखाया था, तुम्हें याद है।

तुम चलते हो, हर कदम पर उछलते हुए, समतल पर आगे-पीछे।

"तुम्हारे पैर क्या कह रहे हैं?" मैं पूछता हूँ।

"बस कुछ ही देर में," तुम जवाब देते हो। "शायद इस तरफ?" तुम इतना कह थोड़ा और बढ़ जाते हो।

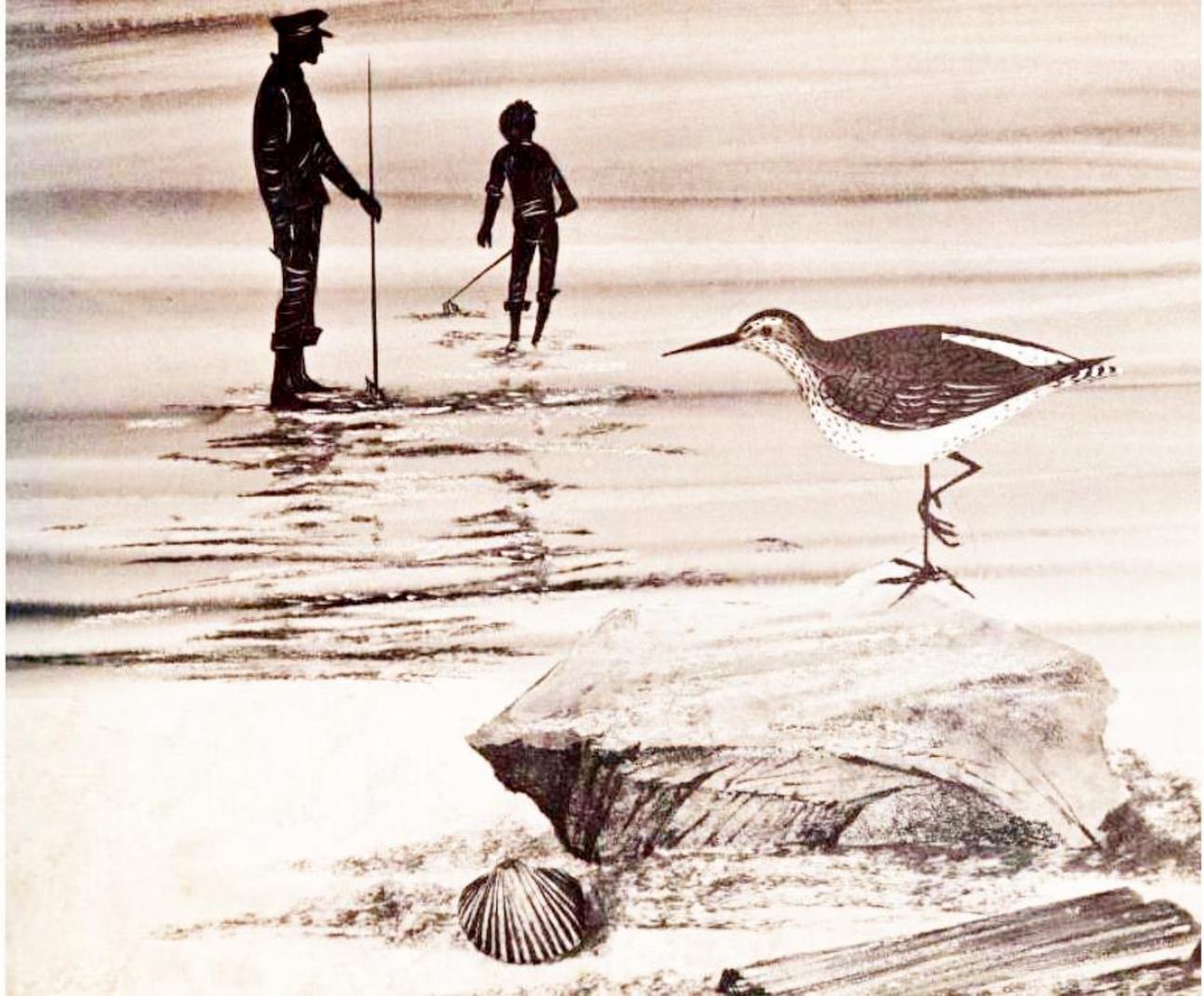

मैं जिस रेत को कंटिए से कुरेद रहा हूँ, वह ऊपर से नरम है। उसके नीचे नीली-सुरमई मिट्टी की धारियाँ, लहरों-सी झिलमिलाती हैं। दो मतर्बे रेत-केंकड़ा अपने बिल से बाहर निकल कंटिए के नीचे से भाग निकलता है। वो जो पुराने जंग लगे धब्बों से दिख रहे हैं, वे दरअसल समुद्री कीड़ों के बिलों के छेद हैं।

पैरों की उंगलियों से टोह पा कर, तुम्हें ही पहला क्लैम (सीपी) मिलता है। "यहाँ इधर," तुम पुकराते हो। खासी बड़ी और सुन्दर क्वाहॉग सीपी है, मेरी कलाई जितनी मोटी।

"वह पत्थर होने का स्वाँग कर रही थी," तुम मुझे बताते हो।

"देखें तो ज़रा, और क्या-क्या स्वाँग कर रहा है," मैं कहता हूँ।

हम साथ मिल रेत को कुरेदते हैं। मैं तुम्हें बताता हूँ कि इन्डियन (अमरीका के मूल निवासी) सबसे चिकने बैंगनी सीपियों के खोल बचा कर रखते थे।

लम्बी चलने वाली सर्दियों के ख़राब तूफ़ानों के दौरान वे इन सीपियों को काट और तराश कर लम्बे मनके बनाया करते थे। वे अपने घरों में आग के गिर्द बैठते, और मनके तराशते समय, पुराने किस्से सुनाते। तुम इन्डियन बनने का खेल कर, आवाज़ निकालते हुए ऊपर-नीचे कूदते हो। इसके बाद हम काफ़ी देर तक चुप रहते हैं, पर खोदते चलते हैं। हो सकता है कि हम दोनों ही सोच रहे हों कि हमारा तट कितना पुराना है। यह शायद तब भी ठीक ऐसा ही रहा होगा जब आदिवासी यहाँ सीपियाँ खोदते हों।

किस्मत हमारा साथ देती है। चार और विशाल सीपियाँ और दर्जन भर कुछ छोटी हमारे हाथ लगती हैं। हम बिलकुल छोटी वाली नहीं लेते। उन्हें अभी बढ़ना है। भाटे के साथ जैसे-जैसे पानी तट से नीचे उतरता है, हमारा रेत का गड्ढा सूखता जाता है। हम पानी के किनारे-किनारे बढ़ते हैं।

तुम आगे दौड़ जाते हो, समतल पर ऊपर-नीचे चलते हो। मैं तुम्हें बैठ कर हाथों से रेत खोदते देखता हूँ। मुझे पता है कि तुम रेज़र क्लैम (उस्तरा सीपी) का पीछा कर रहे हो। तुम उसके ऊपरी हिस्से को इतनी ज़ोर से खींचते हो कि उसके बिना ही पीछे को पलटी खा जाते हो।

"कोई नहीं," मैं कहता हूँ। "दूसरे को निकालने की कोशिश करो।"

"मैं भूल गया हूँ। फिर से बताइए ना," तुम चिरौरी करते हो।

मैं कुछ अकड़ा-सा घुटने टेकता हूँ। अब मैं जवान जो नहीं हूँ। अगली बार जब क्लैम पिचकारी छोड़ती है, मैं ज़ोर से खोदता हूँ। रेत मेरे नाखूनों के अन्दर घुसती है, खुरदूरी और पैनी। मैं उसके नाज़ुक खोल के ऊपरी सिरे को पकड़ता हूँ। आहिस्ता से बिना दबाए। तब दूसरे हाथ से उसके खोल के आसपास खोदता हूँ, ठेठ नीचे तक। तब अचानक वह अपनी पकड़ छोड़ उठ आती है।

"रेज़र से सबसे बढ़िया चाउडर (मछली और सीपियों से बना गाढ़ा सूप) बनता है," तुम कहते हो। यह बात तुम हरेक गर्मियों में सुनते आए हो, सो दोहराते हो। पर इस साल तुम कितने बड़े हो चुके हो। अब तुम उनके पिचकारी मारने पर जल्दी पर सावधानी से खोदते हो, क्योंकि उनके खोल के किनारे बेहद पैने हैं। इसलिए ही तो उनका नाम रेज़र क्लैम है।

जब हमारी बाल्टी आधी भर जाती है, हम उथले पानी में बढ़ते हैं। वहाँ बहुत कुछ हो रहा है। केंकड़ों के झुण्ड आगे-पीछे आ-जा रहे हैं, वे छोटी झींगा माछ को खा रहे हैं। हर आकार के केंकडे हैं। कुछ खाने की थाली जितने बड़े, तो दूसरे गुड़ियों की तश्तरी जितने छोटे।

और लाखों मिन्नो मछलियाँ हैं। वे गझिन झुण्डों में हमारे क़रीब से गुज़रती हैं। मानो दिखा रही हों कि तैरना कितना आसान होता है। उनमें से जो छोटी हैं वे पुदीने के रंग की हैं। जब सूरज की रोशनी उन पर पड़ती है उनकी रीढ़ की हड्डी दिखाई देती है। बड़ी वाली हरी और सुरमई हैं और उनकी आँखें पीली।

तुम अपने जाल को इधर-उधर हिला कर ऊपर उठाते हो। कई बार वह बिलकुल खाली ही उठता है। पर आख़िरकार तुम एक बढ़िया-सी मिन्नो मछली को पकड़ पाते हो। वह जाल में फड़फड़ाती है। उसके गलफाड़ खुलते और बन्द होते हैं। वह तुम्हारी छोटी उंगली-सी पतली है। तुम जाल पानी में नीचे करते हो और उसे तैर जाने देते हो। उसे अभी बहुत बड़ा होना है।

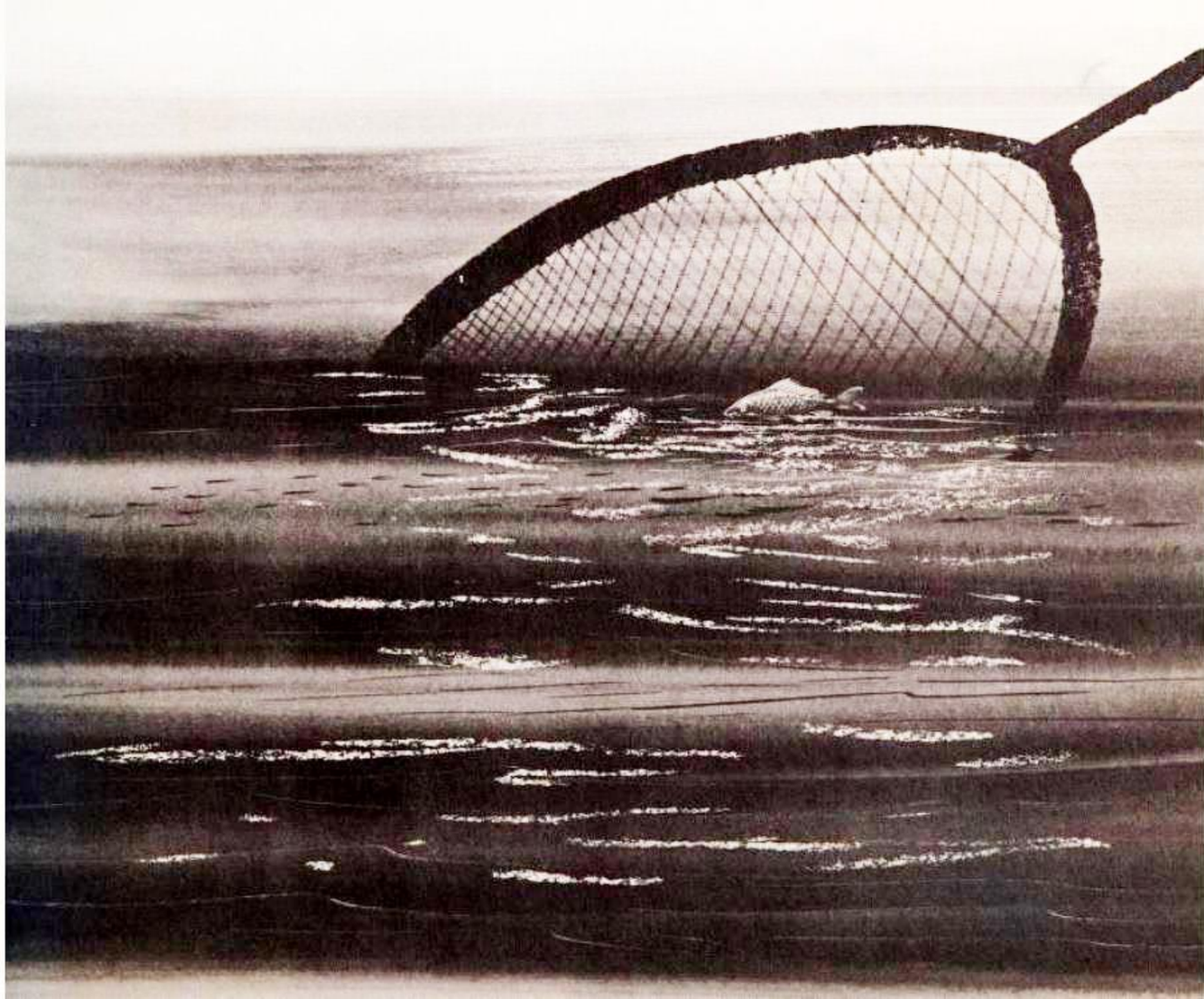

कस्तूरा सीपी (ऑयस्टर) को हमें बड़े ध्यान से खोजना पड़ता है। क्या तुम्हें याद है कि उसे कैसे तलाशा जाता है? तुम कुछ पत्थर उठाते हो जिन पर उसका खोल चिपका है।

"जल कुक्कट इसे खा चुके हैं," तुम कहते हो। मैं मुस्कुराता हूँ क्योंकि तुम्हें याद है।

मैं अपने कंटिए से कुछ पत्थर हटाता हूँ। हम धीमे-धीमे उथले पानी में बढ़ते हैं। अब गरदन पर सूरज का ताप महसूस होने लगा है।

इस बार मैं अव्वल आता हूँ। मैं पत्थर को बल्टी के किनार पर ठोकता हूँ ताकि ऑयस्टर पत्थर से अलग हो जाए। तुम आ कर उसे देखते हो। कुछ ही देर में तुम्हें भी मेरे वाले से भी बड़ा ऑयस्टर मिल जाता है। दोनों के बीच हम दर्जन भर ऑयस्टर इकट्ठा कर लेते हैं।

अब भाटा, ज्वार में बदल रहा है, सो तट पर पानी लौटने लगा है। इंच-दर-इंच वह समतल हिस्से को निगल रहा है। तुम्हें अचम्भित करने का यही समय सही है।

मैंने तुम्हें पहले नहीं बताया है। क्योंकि सबसे अच्छी चीज़ सबसे आख़िर में आनी चाहिए। हम दोनों अपने बीच बाल्टी थामे उसे ऊँचे पानी के निशान के पार ले जाते हैं। तब मैं कहता हूँ, "अपनी आँखें बन्द करो।" मैं हाथ पकड़ तुम्हें आगे बढ़ाता हूँ। क्या तुम चोरी-छिपे झांक रहे हो? मुझे ऐसा नहीं लगता। जब हम लकड़ी के ढांचे के उस पार आ पहुँते हैं, मैं कहता हूँ, "अब खोलो!"

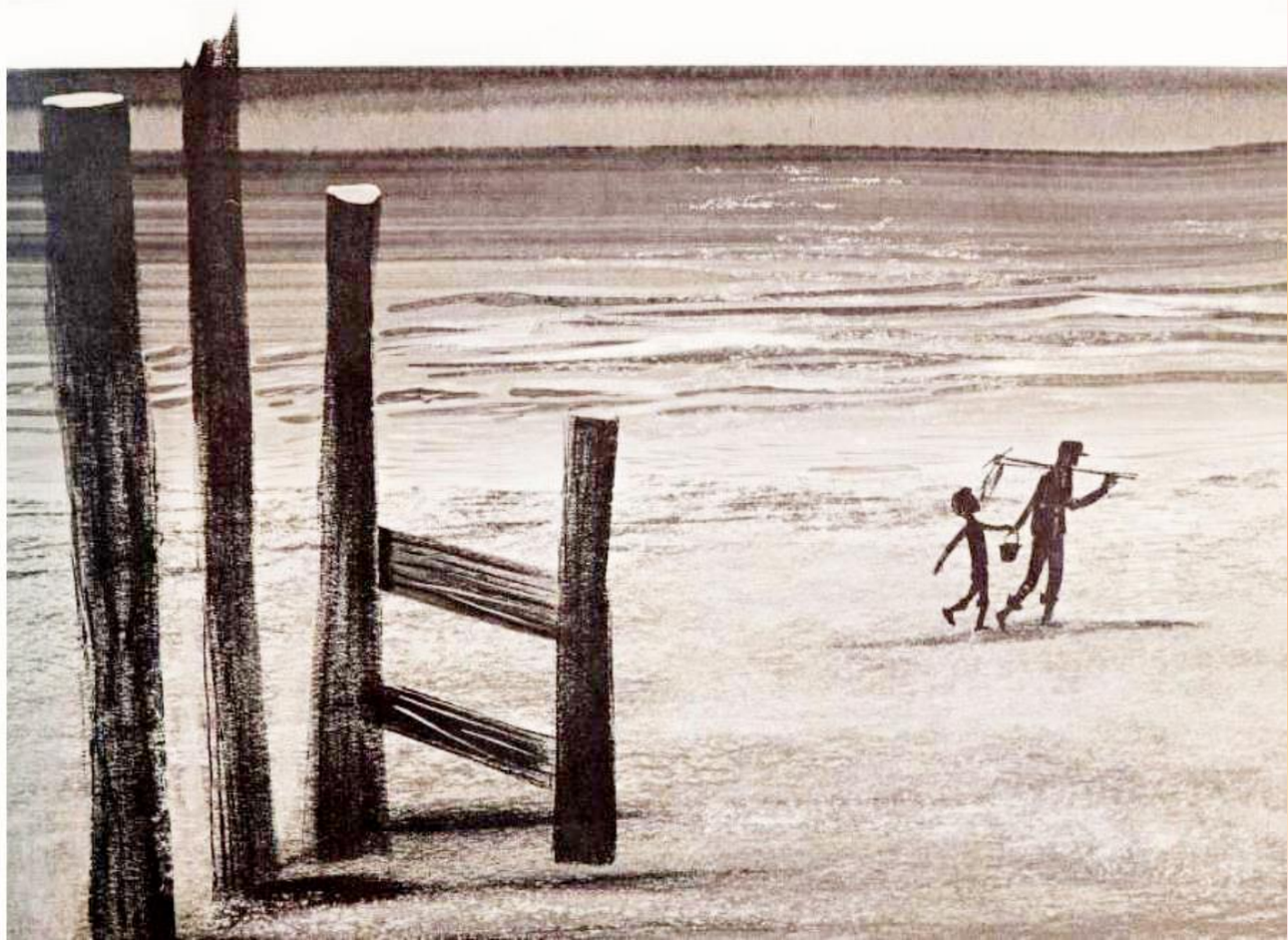

पल भर तुम चुप खड़े रहते हो। पल भर मैं सोचता हूँ, शायद मैंने भूल की है।

पर तब तुम चीखते हो, "याहू!" और "हुर्रे!" तुम इधर-उधर नाचते हो, अपनी खुशी को सीने से चिपटाए। हाँ, यही तो तुम चाहते थे। मैं जानता था कि इस साल यह हो ही जाना चाहिए।

वह छोटी डोंगी सुर्ख लाल है, उसका रंग ताज़ा है। सीट के नीचे मोमजामे की थैली में तुम्हारा जीवन रक्षक जैकेट है। तुम अब सच में बड़े हो चुके हो। सो तुम यह नहीं कहते, "मैं तैरना जानता तो हूँ।" तुम समझने लगे हो कि वह जैकेट गहरे पानी में तुम्हारी रक्षा करेगा।

अभी भी इतना समय है कि हम जल्दी से अपने पिंजड़ों के निशानों तक जा सकें। पहले मैं चप्पू चलाता हूँ, तब तुम। मैं तुम्हें अपने दो पिंजड़ों की बात बताता हूँ। पर चेता भी देता हूँ कि हमें शायद उनमें कुछ न मिले। हमारे निशान लाल और पीले हैं। हम पहले को पकड़ते हैं। तुम पिंजड़े की रस्सी खींचने में मेरी मदद करते हो। "यह भारी लग रहा है," तुम कहते हो। मैं ना में सिर हिलाता हूँ। मुझे लगता है कि किस्मत ने हमारा साथ नहीं दिया है। मैं तुमसे यह कहता हूँ।

दो बेवकूफ फिडलर केंकडे बेंत के पिंजड़े में आ फंसे थे। हम पिंजड़े को खोल उन्हें निकाल देते हैं। मैं ताज़ा चारा लगा पिंजड़े को वापस पानी में फेंकता हूँ।

"कोई बात नहीं," तुम मुझसे कहते हो। "मुझे बुरा नहीं लगा है।"

अगले निशान पर हम दोनों रस्सी को खींचते हैं, मुझे इस बार फर्क महसूस होता है।

"दो हैं," तुम कहते हो, "दो लाब्स्टर (बड़ी झींगा) हैं।" तब मैं पिंजड़ा खोलता हूँ। "नहीं तीन हैं!" सचमें तीन लाब्स्टर हैं, पर तीसरा बहुत छोटा है। "यह तो समुद्र का है," तुम कहते हो। मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि उसके पैने पंजों से बचते हुए उसे कैसे उठाना चाहिए। तुम खुद उसे उठा पानी में वापस डालते हो।

"और ये हमारे लिए हैं," मैं कहता हूँ। "रात के खाने में आज ऑयस्टर, चाउडर और लाब्स्टर होंगे!"

लौटते समय डोंगी को मैं चलाता हूँ। मैं थक चुका हूँ, मेरे पैर वज़नदार लगने लगे हैं। सूरज अब ठेठ ऊपर तक चढ़ चुका है।

''हम कल वापस लौटेंगे ना?'' तुम जानना चाहते हो।

''बेशक, कल और परसों, उसके बाद और उसके भी बाद,'' मैं जवाब देता हूँ।

''उसके बाद और उसके भी बाद,'' तुम सपने में खोए-से कहते हो।

जब हम उथले पानी तक पहुँचते हैं, तुम बाहर कूद डोंगी को किनारे खींचने में मदद करते हो। तुम भूखे हो, बेहद भूखे!

"मैं पूरी व्हेल मछली खा सकता हूँ," तुम ऐलान करते हो। घुटनों तक के पानी में तुम कुछ इस तरह पैर पटकते हो मानो व्हेल को तलाश रहे हो।

"नाश्ते में अपन क्लैम्स् (बड़ी सीपियाँ) खाते हैं," तुम कहते हो।

"क्लैम्स् तो चाउडर के लिए हैं," मैं तुम्हें बताता हूँ। "और फिर अब तक तो नाश्ता भी तैयार हो चुका होगा।"

घर वापसी पर बाल्टी को हम दोनों अपने बीच लटकाए हुए हैं। तब तक, जब तक हम ढूहों के बीच वाले कंटीले रास्ते पर नहीं पहुँच जाते। तब तुम मेरे आगे भागते हुए बढ़ जाते हो।

कॉटेज का दरवाज़ा धड़ाम से बन्द होता है। कुछ ही देर में तुम बरामदे से आवाज़ लगाते हो।

"पता है, नाश्ता तैयार है," तुम चीखते हो। "पैन केक (मीठे चिल्ले) हैं। और बेकन (सूअर का माँस)। और ब्लूबैरी के मफिन, आलूबुखारे के जैम के साथ। हुर्रे!"

लेखिका

मैक्सीन डब्ल्यू. कुमिन छोटे बच्चों के लिए कल्पनाशील पुस्तकों की लेखिका हैं। उनकी हालिया फंतासी *स्पीडी डिगस् डाउनसाइड अप* के बाद उनकी कविताओं का संकलन *नो वन राइटस् अ लैटर टू द स्नेल* प्रकाशित हुआ है। वे अपने पति व बच्चों के साथ न्यूटन हाइलैण्डस्, मैसाच्युसैटस् में रहती हैं।

चित्रकार

लैनर्ड वाइसगार्ड स्वयं भी दर्जन भर से अधिक बाल पुस्तकों के लेखक हैं। उन्होंने तकरीबन 200 किताबों के चित्र भी बनाए हैं। उन्हें कैलडीकॉट और कई ग्राफिक आर्टस् पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। वे रॉक्सबैरी, कैनेटिकट में अपनी पत्नी फिलिस व बच्चों एबिगेल, क्रिस्टीना व ईथन के साथ रहते हैं।